19.08.2020. B.A. Part-II Economics (Hons), Paper-IV P-4
Dr. ... Professor, Dept. of Economics, R.R.S. College, Mokama (Patna) P.P.U., Patna

प्रश्न : करों के विभिन्न प्रभावों एवं करारोपण (Tax Effect), कराघात एवं करापात की विशेषताओं का वर्णन करें।

... निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है :

(1) करारोपण का उत्पादन पर प्रभाव : करारोपण से कार्य करने, बचत करने तथा निवेश की क्षमता और कार्य करने, बचत करने और निवेश करने की इच्छा प्रभावित होती है। कर इन्हें कम करता है परन्तु जब सरकार करारोपण द्वारा संग्रहित धन खर्च करती है तब इससे देश के नागरिकों को सुविधाएँ एवं कुशलताएँ प्राप्त होती हैं। इससे कार्य करने, बचत करने एवं निवेश करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ते हैं। इसलिए समग्र सार्वजनिक व्यय के प्रभावों को भी ध्यान में रखा जाय।

(2) करारोपण का वितरण पर प्रभाव : आधुनिक कल्याणकारी सरकार का मुख्य उद्देश्य है आय और असमानताओं को कम करना। समाज के निर्धन वर्ग के लिए सार्वजनिक व्यय इस प्रकार किया जाय जिससे गरीब लोगों की आय में वृद्धि हो। इसके साथ ही करारोपण का प्रबन्ध इस प्रकार से किया जाय जिससे समृद्ध लोगों की आय और सम्पत्ति में वृद्धि पर रोक लगे।

(3) करारोपण का उपभोग पर प्रभाव : उपभोग की मात्रा तथा प्रकृति पर नियंत्रण कुछ वस्तुओं की बिक्री पर भारी कर लगाकर किया जा सकता है। राष्ट्रीय सीमाओं के पार से आने वाले उत्पादों का नियमन आयात-निर्यात शुल्क लगाकर किया जा सकता है।

(4) करारोपण का मंदी के समय में प्रभाव : मंदी की स्थिति से निपटने के लिए करारोपण में कमी आवश्यक है। विशेष रूप से उन करों में कमी आवश्यक है जो निम्न आय वर्गों पर पड़ते हैं। वस्तु करों में कमी से उपभोग की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी होगी और बाजार में राहत होगी। ऐसे समय में प्रायः घाटे वाले बजटों को प्राथमिकता दी जाती है।

(5) करारोपण का मुद्रास्फीति पर प्रभाव : मुद्रास्फीति के दौर में करारोपण का लक्ष्य होता है उपभोक्ता की क्रय शक्ति को कम करना। इस दिशा में आय और व्यय पर करारोपण, सार्वजनिक व्यय को नियंत्रित करने में उपयुक्त होता है। आयात शुल्कों में कमी और वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि भी अर्थव्यवस्था को मुद्रास्फीतिकारी दबावों को कम करती है।

अब हम 'कराघात' (Impact of tax) एवं 'करापात' (Incidence of tax) की चर्चा करेंगे।

'कर के प्रथम आघात' को 'कराघात' (Impact of tax) कहते हैं। सरकार कर जमा करने का दायित्व जिस व्यक्ति पर डालती है, उस पर 'कराघात' (Impact of tax) होता है। लेकिन करभार के अन्तिम आघात बिन्दु पर 'करापात' (Incidence ... होता है। अतः करापात उस व्यक्ति पर पड़ता है, जो कर के भार

को किसी दूसरे व्यक्ति पर डालने में असमर्थ होता है। इस प्रकार जब कर लगाया जाता है कि कर का प्रथम आघात 'करावात' कहलाता है। किन्तु यदि व्यापारी कि वह वस्तु की कीमत बढ़ाकर कर भार को दूसरे व्यक्तियों (उपभोक्ता) को दे, तो 'करापात' उसी व्यक्ति पर माना जायेगा जो कर को आगे नहीं डाल सकता।

कर विवर्तन (Shifting of taxation): 'कर विवर्तन' वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति स्वयं पर लगाये गये कर भार को अन्य व्यक्तियों पर डाल देता है। कर का विवर्तन पूर्णतः कानूनी आधार पर होती है।

कुछ लोग कम आय दिखाकर कर से बच जाते हैं, इसे कर का 'अपवंचन' (Tax Evasion) कहा जाता है। कर अपवंचन गैर कानूनी है।

इस सम्बन्ध में 'Prof. Dalton' ने अपने विचार को निम्नलिखित तरीके से अभिव्यक्त किया है (परिभाषित किया है), "करापात की समस्या से साधारणतः यह अभिप्राय लिया जाता है कि कर का भुगतान कौन करता है। अधिकांशतः निश्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि कर का मौद्रिक बोझ उस पर पड़ता है जो प्रत्यक्ष रूप से कर का बोझ उठाते हैं।"

'फिण्डले शिराज' के अनुसार, "करभार की समस्या का विश्लेषण यह निर्धारित करता है कि कर का भुगतान कौन करता है अर्थात कर का मौद्रिक भार किस पर पड़ता है।"

*करापात (Incidence of tax): 'प्रो. मसग्रेव' के अनुसार, करापात तीन प्रकार के होते हैं:

(1) विशिष्ट करापात: जब कोई कर सरकारी खाते के व्यय पक्ष में बिना किसी परिवर्तन के लगाया जाता है।

(2) विभेदी करापात: जब कोई कर किसी अन्य कर के विकल्प के रूप में लगाया जाता है, तो वह 'विभेदी करापात' कहलाता है।

(3) संतुलित बजट करापात: जब कर की आय से सरकार अपने व्यय में वृद्धि करती है तो वह 'संतुलित बजट करापात' कहलाती है।

*करावात: अब हम करावात (Impact of tax) की चर्चा करेंगे। 'करावात' कर लगने के तत्काल भार को कहते हैं। अतः करावात कर का तत्काल परिणाम है जो उस व्यक्ति पर पड़ता है जिससे सरकार कर वसूल करती है अर्थात प्रथम जो कर का भुगतान करता है। इस प्रकार, यह जरूरी नहीं कि कर का 'करावात' और 'करापात' एक ही व्यक्ति पर पड़े। करावात उत्पादक पर पड़ता है जबकि 'करापात' उपभोक्ता पर। जिस व्यक्ति को कर का भुगतान तुरन्त करना पड़ता है उस पर करावात होता है। इस प्रकार

हम यह कह सकते हैं कि करापात की अपेक्षा कराघात का (अध्ययन) कम महत्वपूर्ण है।

'प्रो० जे. के. मेहता' के अनुसार, "करापात को तत्काल मुद्रा भार कहा जाता है। जो व्यक्ति सरकार को कर का भुगतान करता है वह कराघात सहन करता है।"

कर लगाने का उद्देश्य केवल धन इकट्ठा करना ही नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य आर्थिक और सामाजिक न्याय के आधार पर वसूली करना है। समाज में धन का समान एवं न्यायपूर्ण वितरण, उत्पादन तथा रोजगार में वृद्धि और देश के आर्थिक विकास के लिए कर भार की समस्या का अध्ययन आवश्यक है।

* अब हम एक अच्छी कर प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करेंगे — एक अच्छी कर प्रणाली की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं:

(1) कर सरकार को दिया गया एक भुगतान है: कर सरकार के द्वारा अधिकृत संस्थाओं के द्वारा लगाया जाता है, इसलिए कर केवल जनता के द्वारा सरकार को दिया गया भुगतान है।

(2) कर एक अनिवार्य भुगतान है: यदि करदाताओं ने कर लगाने योग्य परिस्थिति को प्राप्त कर लिया है तो कर का भुगतान अनिवार्य है। उदाहरणतया, यदि एक व्यक्ति सिगरेट नहीं पीता है तो वह तम्बाकू पर बिक्री कर देने से इंकार कर सकता है।

(3) कर लाभों की कीमत पर नहीं: करों का भुगतान सामान्यतया लोगों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है। इसका एकत्रीकरण किये गए लाभों की लागत वसूलने के लिए नहीं किया जाता है।

(4) त्याग का तत्व: कर भुगतान में त्याग का तत्व भी सम्मिलित होता है। जब हम कोई वस्तु खरीदते हैं तो हमें कीमत ही देनी पड़ती है -- परन्तु करों के मामले में कम से कम तक कुछ में त्याग की भावना रहती है कि कर० [illegible]

(5) कर व्यक्तियों द्वारा दिया जाता है: कर देना एक व्यक्तिगत दायित्व होता है इसलिए सभी कर व्यक्तियों द्वारा दिये जाते हैं न कि उन वस्तुओं एवं सम्पत्तियों के ऊपर जिन पर वह लगाया जाता है।

(6) कानूनी स्वीकृति: करों को भी कानूनी स्वीकृति होती है। इसकी वसूली भी कानूनी होती है और कर नहीं चुकाना दण्डनीय अपराध है और इसे न्यायालयों द्वारा स्वीकार्य।

(7) कर कई प्रकार के होते हैं, आयकर, बिक्री कर, धन कर, सम्पत्ति कर, मनोरंजन कर, जल कर एवं गृह कर इत्यादि।

(8) करदाता को प्राप्त लाभ स्पष्ट रूप में कर की वापसी नहीं है।

(9) व्यापार तथा उद्योगों पर कोई प्रभाव नहीं।

(10) कर एकत्रीकरण का लक्ष्य है जन कल्याण।